International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 11 No. 5 May-June 2024

# छिन्नमस्ता: स्त्री जीवन की त्रासदी से मुक्ति की यात्रा

**डॉ. अर्शिया सैयद**
हिंदी विभाग प्रमुख, तिरपुडे समाजकार्य महाविद्यालय नागपूर
**Corresponding Author: डॉ. अर्शिया सैयद**
**Email:** hakimarshiya@gmail.com
**DOI- 10.5281/zenodo.12704145**

**सारांश :**

छिन्नमस्ता उपन्यास प्रभा खेतान द्वारा स्त्री-विमर्श पर लिखा गया एक बहुत चर्चित उपन्यास है। इस उपन्यास की नायिका प्रिया बचपन से ही भेदभाव,उपेक्षा और यौन-शोषण का शिकार होती है। भावनात्मक सुरक्षा को तलाशती बालिका बड़ी होते-होते स्वयं को सक्षम कर लेती है। लेखिका प्रभा खेतान ने प्रिया को छिन्नमस्ता के समान चित्रित किया है।बचपन से लेकर बड़े होने तक शोषण, अत्याचार,उपेक्षा,घृणा को सहते-सहते अंत में प्रिया स्वयं को सभी चिताओं से मुक्त करती है और सफल व्यवसाय के रूप में समाज में अपनी अलग पहचान बनाती है|

**मुख्य शब्द:** त्रासदी,उत्पीड़न, मानसिक- परिणाम,आत्मनिर्भर, स्वतंत्रता, मुक्ति।

प्रभा खेतान द्वारा लिखित उपन्यास छिन्नमस्ता में नायिका प्रिया के माध्यम से समाज में स्त्रियों की सद्य-स्थिति का चित्रण किया गया है। इस उपन्यास को पढ़ने के बाद ज्ञात होता है कि केवल मध्यवर्गीय और निम्नवर्गीय स्त्रियों के जीवन में ही त्रासदी का महासागर विद्यमान नहीं है वरन् संपन्न प्रतिष्ठित उच्च वर्गीय स्त्रियों के जीवन में त्रासदी की कमी नहीं है। त्रासदी इसलिए क्योंकि इसकी परिभाषा में ही कहा गया है," जो विपत्ति या दुर्भाग्य का संकेत देती है। एक दुखद घटना या आपदा के अर्थ में त्रासदी शब्द का प्रयोग होता है।"1 बाल्यावस्था से लेकर प्रौढावस्था तक परिवार ,समाज,परंपरा, रीति-रिवाज हर एक से लड़ती हुई प्रिया अंतत अपने आप को सारे बंधनों से मुक्त करती है, किंतु यह मुक्ति इतनी भी सरल नहीं है, इस मुक्ति के पीछे कितनी आहुतियां शामिल है, कितने वंचनाओं के क्षण शामिल है, कितनी अपमान भरी यादें शामिल है,कितनी ही उत्पीड़न और शोषण की घटनाएं भरी पड़ी है। प्रिया जैसी कितनी स्त्रियां है, जो संघर्ष कर रही है अपनी मुक्ति के लिए और स्वतंत्रता के लिए,प्रभा खेतान का यह उपन्यास ऐसी स्त्रियों पर केंद्रित है।स्त्री विमर्श पर लिखा गया प्रभा खेतान का यह उपन्यास मील का पत्थर है। इस उपन्यास में लेखिका ने स्त्री जीवन की त्रासदी से जुड़ी बहुत-सी बातों पर बेबाकी से बात की है।"स्त्री पैदा नहीं होती स्त्री बनाई जाती है", सिमोन दबऊवार की पुस्तक 'द सेकंड सेक्स' (1949)में कहीं इस बात को लेखिका ने छिन्नमस्ता उपन्यास में
प्रिया के संघर्षरत जीवन के माध्यम से उजागर किया है|

आज भी हमारे समाज में लड़की के पैदा होने पर इतनी खुशी नहीं होती। स्वयं प्रिया इस संबंध में सोचती है," परिवार में लड़की को जन्म देने पर मां का पारिवारिक स्तर भी घट जाता है। हमारे समाज में हर बेटी की मां को हीन भाव से देखते हैं और हर लड़की जब बड़ी होती है तो समाज, परिवार, स्वजन, परिजन उसको अनाम गुनाहों के बोझ तले दबते चले जाते हैं। मेरी मां मेरे जन्म के बाद ना अपने आप को माफ कर सकी ना मुझे।"2 कहने को प्रतिष्ठित रईस मारवाड़ी परिवार में प्रिया का जन्म हुआ किंतु लड़की पैदा होने का दुख परिवार सहित डॉक्टर को भी अधिक था। प्रिया को देखते ही डॉक्टर अमृता ने दाईमां से कहा," तुम ही जाकर सेठ जी से कहो कि लड़की हुआ है, हम बोलेगा तो हमारा प्रेक्टिस खराब हो जाएगा।"3 प्रिया के जन्म की खबर सुनकर दादी दुख से कह उठी"हे रामजी, चार-चार बेटियां आ पडी।" दादी मां कमरे में झांकने भी नहीं गई थी।4 चौथी बेटी के रूप में जन्म लेने के कारण प्रिया को कभी मां का प्यार नहीं मिला उसे दाई मां ने ही पाला।

परिवार में लड़कियों को बोझ माना जाता है। उनके जन्म पर खुशियां नहीं मनाई जाती बल्कि माता–पिता अच्छे वर, विवाह का खर्च और दहेज के बंदोबस्त की चिंता में गमगीन हो जाते हैं। छिन्नमस्ता उपन्यास के माध्यम से प्रभा खेतान ने बेटियों के विवाह की समस्या पर भी प्रकाश डाला है। किस प्रकार माता–पिता के लिए बेटियों का विवाह समस्या बन चुका है? इस पर भी लेखिका ने पाठकों का ध्यान आकर्षित किया है। लड़की देखने में सुंदर होनी चाहिए यह तो वर पक्ष की पहली मांग होती है, बाद में वधू पक्ष की ओर से मोटी रकम दहेज में मिलना ही चाहिए या दूसरी मांग और विवाह के सारे रीति– रिवाज और आदरातिथ्य में दिलखोल कर खर्च किया जाना चाहिए यह तीसरी मांग होती है। वर पक्ष की इन मांगों के सामने लड़की के माता–पिता की स्थिति दयनीय हो जाती है। मगर समाज में रहना है तो यह सब कुछ करना ही होगा।प्रिया से बड़ी तीन बहने थी। बड़ी बहन की शादी में प्रिया के पिता ने एक

लाख रुपया खर्च किया था। प्रिया बताती है 'उस समय जो एक लाख रुपया लगाया गया था।चालीस वर्ष बाद आज उसकी कीमत कितनी है? यानी करोडों से ऊपर का दहेज बाबूजी ने दिया था।'5 बड़ी बहनें देखने में सुंदर थी किंतु प्रिया साधारण शक्ल-सूरत की थी। इसी कारण माँ को हमेशा प्रिया के विवाह की चिंता लगी रहती थी।आज भी हमारे समाज में बेटियों को पराया धन कहा जाता है। यह मान लिया जाता है कि बेटियों का घर उसका ससुराल ही होता है। उन्हें 'गुप्ता हाउस की बेटी और अग्रवाल हाउस की बहू'6 के रूप में पहचाना जाता है उनका अपना स्वतंत्र अस्तित्व और स्वतंत्र पहचान नहीं होती। जो स्त्री प्रिया की तरह अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाती है, पुरुष प्रधान उसे समाज स्वीकार नहीं कर पाता इसलिए प्रिया कहती है," फिलिप! अपने पैरों पर खड़ी एक औरत को स्वीकार कर पाने में अभी हमारे समाज को समय लगेगा।"7

प्रभा खेतान ने छिन्नमस्ता उपन्यास के माध्यम से स्त्री उत्पीड़न की जिन-जिन घटनाओं को पाठकों के समक्ष रखा है,उससे कोई अनजान नहीं है।अधिकांश स्त्रियाँ अपने जीवन में इनमें से किसी न किसी उत्पीड़न का शिकार होती आई है। नारी शोषण का जो घिनौना रूप प्रभा खेतान ने उपन्यास में प्रस्तुत किया है, वह हमारे समाज की सच्चाई है।"यह उपन्यास आधुनिक नारी की त्रासदी और उसके संकल्प का प्रमाणिक दस्तावेज है।"8 कहने को हम आधुनिक युग में जी रहे हैं किंतु आज भी हमारी स्त्रियां सुरक्षित नहीं है ना हीं परिवार की चार दीवारों में, ना ही बाजारों में, ना हीं विद्यालयों में, ना दुकानों में, ना कामकाज की जगह पर। हर जगह पुरुष उसका उत्पीड़न और शोषण करने के लिए तैयार खड़ा है। घर की चार दीवारों के भीतर ही प्रिया स्वयं बड़े भाई के द्वारा बलात्कार की शिकार हुई कई वर्षों तक बड़े भाई ने ही उसका उत्पीड़न और शोषण किया। अबोध बालिका ने यह बात दाई माँ से कही," मेरी गलती नहीं दाई मां, भाभी जी जब भी पीहर जाती है, भैया इसी तरह छेड़ते रहते है।"9 किंतु वह इस बात को कभी अपनी माँ से नहीं कह पाई क्योंकि वह जानती थी,'बाबूजी के जाने के बाद घर के बड़े तो भैया हैं। अम्मा हमेशा भैया की तरफदारी करती है।'10 प्रिया जानती थी कि बड़े भाई के इस अपराध पर पर्दा डाल दिया जाएगा केवल भाई द्वारा ही नहीं वरन् पाँच साल की उम्र में नौकर द्वारा11 और बारह साल की उम्र में बाज़ार में 12प्रिया पुरुषों द्वारा उत्पीड़न का शिकार हुई।छोटी अबोध बालिकाओं के साथ हुए यौन शोषण के कारण उनके मानसिक स्थिति पर गहरा आघात होता है।वह सहम जाती है, डर जाती है, किसी से कह नहीं पाती और कहती भी है तो उसे परिवार के प्रतिष्ठा के कारण चुप रहने की सलाह दी जाती है। जैसे दाई माँ ने प्रिया को दी थी,"ए बिटिया,ई बात कभ्भो किसी से कहियो मत।"13 बचपन से लेकर बुढी होने तक स्त्रियों को चुप रहना और अत्याचार को सहते जाना यही सिखाया जाता है।यदि कोई लड़की उसपर हुए अत्याचार का विरोध करती भी है,तो परिवार, रिश्तेदार,या समाज उसकी आवाज़ को दबा देता है।

बचपन से उत्पीड़न का शिकार हुई प्रिया की मानसिक स्थिति का वर्णन प्रभा खेतान ने उपन्यास में कई घटनाओं के माध्यम से किया है। जिसके द्वारा उत्पीड़न का मानसिक परिणाम क्या होता है? यह बताने का प्रयास उन्होंने किया है।"बहुधा मेरे सपनों में वही बातें होतीं जिनका अभाव मुझे खलता था। मेरे भीतर एक और सुरक्षित लड़की थी जो सिर्फ खिड़की-सलाखों से सिर टिकाए अब भी अपने बाबूजी की लौटने की राह देख रही थी।"14केवल पिता ही थे जो प्रिया से प्रेम करते थे उनके मृत्यु के पश्चात प्रिया नितांत अकेली हो गई वह जानती थी कि केवल बाबूजी उसकी सुरक्षा कर सकते थे।वह सपनों में बाबूजी को देखा करती थी क्योंकि,"सुरक्षा,मुझे सुरक्षा की जरूरत थी ताकि कोई मुझे बड़े भैया से बचा ले।"15 बड़ी होती प्रिया के मन में पुरुषों से घृणा का भाव जागृत हुआ वह हर पुरुष में बड़े भैया को देखती।16 उसकी आत्मा किसी पुरुष को अपनाने के लिए तैयार नहीं थी। अपनी दु:खी तार-तार आत्मा की स्थिति के बारे में वह कहती है," चिकनी मांसल देह पर कोई खरोंच का निशान तो नहीं लेकिन जख्मी होने का यह एहसास क्यों हर समय मुझे रुलाता रहता है?हाँ मैं धीमे-धीमे सुबकियों में रोती थी? छि: मुझे नफरत है इस पुरुष जाति से। नफरत है उससे जो मासूम, छोटी नादान लड़की को भी नहीं छोड़ता।"17

उत्पीड़न की शिकार हुई लड़की और औरतों के मन पर यही गंभीर परिणाम होते हैं, जैसे प्रिया के मानस पर हुए। प्रिया ने अपने आसपास जिन- जिन स्त्रियों को देखा, उसने पाया कि उनकी स्थिति दीन-हीन हैं। हर बार उनकी आवाज़ को दबा दिया जाता है। उनकी आत्मा को कुचला जाता है संपन्न परिवार में विवाह होने पर भी प्रिया की स्थिति आश्रित की तरह थी इसलिए उसने स्वयं आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने की बात सोची। उसने धीरे-धीरे अपना बिजनेस शुरू किया। किंतु प्रिया को तरक्की करता देख पति के मन में ईर्ष्या उत्पन्न हुई और उसने प्रिया पर बिजनेस बंद करने के लिए दबाव डालना आरंभ किया, प्रिया पर तरह-तरह के आरोप लगाए, उसकी इच्छा शक्ति को तोड़ने का भरसक प्रयास किया।मगर हार जाने पर प्रिया को घर से बाहर निकाल दिया और उसके बेटे संजू को भी छीन लिया गया। पति के घर से निकलकर प्रिया ने अपने आप को पूर्णत:बिजनेस में समर्पित कर दिया और एक सफल चमड़ा व्यवसायी के रूप में समाज में अपनी अलग पहचान बनाई।समाज और परिवार के बंधनों को तोड़कर, प्रत्येक शोषण और अत्याचार को सहकर प्रियाने अपना एक अलग अस्तित्व बनाया। प्रिया को छिन्नमस्ता का प्रतीक बनाकर प्रभाजी ने उपन्यास में नारी जीवन की यातना,संघर्ष,विद्रोह एवं मुक्ति को अधिक सशक्तता से प्रस्तुत किया है।"18

**निष्कर्ष:**

संपन्न परिवार में जन्म लेकर और संपन्न परिवार में ही विवाह होने के बाद में भी प्रिया के जीवन का संघर्ष मरणांतक पीड़ा से सराबोर है। अपने लिए मुक्ति की कामना कर, उस दिशा में अग्रसर होती प्रिया की कथा प्रत्येक नारी

के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत करती है। त्रासदी से भरा प्रिया का जीवन मुक्ति के लिए निरंतर छटपटाता रहता है और अंतत: उसे प्राप्त करता है। "छिन्नमस्ता नारी यातना, विद्रोह एवं मुक्ति की गाथा है। "19 "छिन्नमस्ता उपन्यास में प्रभा खेतान ने नारी मुक्ति की संघर्ष गाथा को उसकी मानवीय गरिमा के साथ प्रस्तुत किया है।छिन्नमस्ता बनकर अपने लिए रास्ता तलाशने का नारी का प्रयत्न समाज का तिलमिलाने वाला कटु यथार्थ है।" 20 इसलिए छिन्नमस्ता स्त्री जीवन की त्रासदी से मुक्ति की यात्रा की गाथा है।

संदर्भ ग्रंथ :


1. www.vocabulary.com
2. प्रभा खेतान, छिन्नमस्ता, पहला संस्करण 1993, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ क्रमांक 182 से 183.
3. प्रभा खेतान, छिन्नमस्ता, पहला संस्करण 1993, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ क्रमांक 23.
4. प्रभा खेतान, छिन्नमस्ता, पहला संस्करण 1993, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ क्रमांक 24.
5. प्रभा खेतान, छिन्नमस्ता, पहला संस्करण 1993, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ क्रमांक 18.
6. प्रभा खेतान, छिन्नमस्ता, पहला संस्करण 1993, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ क्रमांक 10.
7. प्रभा खेतान, छिन्नमस्ता, पहला संस्करण 1993, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ क्रमांक 179.
8. प्रा. गोपाल राय, हिंदी साहित्य का इतिहास, प्रथम आवृत्ति 2006, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,पृष्ठ क्रमांक 426.
9. प्रभा खेतान, छिन्नमस्ता, पहला संस्करण 1993, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ क्रमांक 16.
10. प्रभा खेतान, छिन्नमस्ता, पहला संस्करण 1993, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ क्रमांक 17.
11. प्रभा खेतान, छिन्नमस्ता, पहला संस्करण 1993, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ क्रमांक 102.
12. प्रभा खेतान, छिन्नमस्ता, पहला संस्करण 1993, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ क्रमांक 103.
13. प्रभा खेतान, छिन्नमस्ता, पहला संस्करण 1993, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ क्रमांक 47.
14. प्रभा खेतान, छिन्नमस्ता, पहला संस्करण 1993, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ क्रमांक 22.
15. प्रभा खेतान, छिन्नमस्ता, पहला संस्करण 1993, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ क्रमांक 102.
16. रचनाकार दीप्ति परमार की उपन्यास समीक्षा:छिन्नमस्ता नारी मुक्ति की संघर्ष गाथा.https://www.rachanakar.org/2010/10/blog.
17. डॉ मधु संधु, महिला उपन्यासकार,पहला संस्करण 2000, नमन प्रकाशन,नई दिल्ली,पृष्ठ क्रमांक 48.
18. रचनाकार दीप्ति परमार की उपन्यास समीक्षा:छिन्नमस्ता नारी मुक्ति की संघर्ष गाथा.https://www.rachanakar.org/2010/10/blog.